लाइबनिट्ज के दर्शन में पूर्व स्थापित सामंजस्य-सिद्धान्त का मह
ये।

(1)

cuss critically the ~~Simpota~~ Importance of Pre-establi
d harmony in the Philosophy of Leibnitz.)

→ लाइबनिट्ज के अनुसार पाश्चात्य दर्शन में चिद् बिन्दुओं के द्वारा .ता को माना गया है। अनेक चिद्‌बिन्दुओं के बीच सम्बन्ध की स्थापना जस प्रकार की जाय, यह लाइबनिट्ज की समस्या बन जाती है। वास्तविक बन्ध पूर्व स्थापित सामंजस्य के रूप में सम्भव नहीं दिखाई पड़ता, क्योंकि क चिद्‌बिन्दु गवाक्षहीन (Windowless) होती है। यह छिद्र रहित होता । ये बाहरी प्रभावों से विहीन है। वे अपने आन्तरिक नियमों से परिचालित ते है। सभी स्वतंत्र है। प्रत्येक चिदविन्दु एक आत्मा की तरह है। अपने वह एक पृथक् विश्व है। चिदविन्दु स्वाधीन, रचित प्रत्येक वस्तु से स्वतंत्र नन्त विश्व को अभिव्यक्त करते हुए स्थायी अपनी हस्ती में गतिशील और रोध हमेशा बना रहता है। इसके अलावा चिद्‌बिन्दु एक-दूसरे से स्वतंत्र है। नमें सामंजस्य (harmony) है। इस सामंजस्य के कारण ही विश्व एक व्यवस्था है।

अनुभव के आधार पर यह तथ्य साबित किया जा सकता है कि चिदविन्दु के साथ विश्व में सामंजस्य है। इस विरोधाभास का निराकरण का लाइबनिट्ज ने पूर्व स्थापित सामंजस्य के नियम से किया है। लाइबनिट्ज ने अपने दर्शन में कहा है कि शरीर कम चेतना है, आत्मा अधिक-चेतना है। लेकिन दोनों का कार्य क्षेत्र स्वतंत्र है। शरीरात्मा का सम्बन्ध तथा विश्व में साम्य, एकरूपता की व्याख्या पूर्व स्थापित सामंजस्य से होती है। वस्तुतः चिदणु या (चिद्‌बिन्दु) स्वतंत्र तथा निरपेक्ष होकर भी एक दूसरे के सहयोगी है। संसार में नियम तथा व्यवस्था के आधार पर एकता तथा ईश्वर का सामंजस्य का रूप ही पूर्व स्था त सामं... यह सामंजस्य ईश्वर के द्वारा सृष्टि के पूर्व स्थापित ... ईश्वर ने एक निश्चित व्यवस्था के अंतर्गत ... निश्चित कर लिया गया था कि

सभी चिद्बिन्दु में समान परिवर्तन हो। एक क्रिया के समान दूसरे में भी क्रिया उत्पन्न होती है। अतः चिद्बिन्दु गवाक्षहीन होकर भी एक दूसरे के सहचारी हैं, सभी चिद्बिन्दु में एक समान ही क्रिया उत्पन्न होती है।

पूर्व स्थापित सामंजस्य की व्याख्या लाइबनित्ज ने दो उदाहरणों द्वारा दर्शाया है। जैसे एक तान संगीत (Orchestra) के वाद्य यंत्र भिन्न-भिन्न होते हैं, अतः वाद्यों की भिन्नता से संगीत में परन्तु सबसे एक ही स्वर की सृष्टि होती है। एक की क्रिया दूसरे में प्रतिक्रिया नहीं उत्पन्न करती बल्कि सबमें समान स्वर उत्पन्न होता है। अतः वाद्य-यंत्रों की भिन्नता से संगीत में विषमता नहीं उत्पन्न होती है। इसी प्रकार दो घड़ियाँ हैं जिनकी गति में समानता है। लेकिन एक का समय दूसरे के समान है। लाइबनित्ज के अनुसार घड़ीसाज ने घड़ियों को इस निपुणता से बनाया है कि (दोनों के यन्त्र बिलकुल समान हैं) एक समान दूसरे में भी समय है। घड़ीसाज ने हस्तक्षेप नहीं करता, बल्कि निर्माण काल में ही उनकी गति की समानता निश्चित कर दी गयी है।

दो चिद्बिन्दुओं के बीच लाइबनित्ज दार्शनिक ने इस बात को मान कर चलते हैं कि दो चिद्बिन्दुओं के बीच ईश्वर ने पहले से ही सामंजस्य-व्यवस्था कायम कर दी है गई। उन्होंने ही चिद्बिन्दुओं को तारतम्यात्मक श्रेणी (hierarchical order) में सजा दिया है। एक चिद्बिन्दु का परिवर्तन दूसरे चिद्बिन्दु में आभासित हो जाता है। दो चिद्बिन्दु में क्रिया-प्रतिक्रिया नहीं होती है। लाइबनित्ज क्रिया-प्रतिक्रिया के सम्बन्ध में विश्वास नहीं करते। लेकिन ईश्वर का देन है कि कोई भी कार्य सामंजस्य रूप में किसी भी कारण से हो जाता है। इन्हीं दोनों क्रियाओं के बीच सामंजस्य करने या जोड़ने वाला ईश्वर ही है। [illegible] वह जैसा सोचता है, वह करता है। इस प्रकार चिद्बिन्दुओं के सामंजस्य में एक ईश्वर की लीला या इच्छा ही मुख्य है।

पूर्वस्थापित सामंजस्य के नियम [illegible] न केवल शरीर और मन के सम्बन्ध की व्याख्या करता है बल्कि दो या दो से अधिक वस्तुओं के बीच के किसी प्रकार के सम्बन्ध की यह व्याख्या करता है। इस नियम के

आधार पर ही उन्होंने शरीर और मन, ईश्वर और संसार, स्वतंत्रता और अनिवार्यता के बीच समन्वय स्थापित करने का प्रयास किया है। इस प्रकार पूर्व स्थापित सामंजस्य के निम्नलिखित गुण है —

(i) पाश्चात्य दर्शन में पूर्वस्थापित सामंजस्य के द्वारा लाइबनिट्ज शरीरात्म सम्बन्ध की व्याख्या करते है। लेकिन देकार्त दर्शन के अनुसार शरीर और आत्मा में अन्तर्क्रिया (Interactionism) रूप मानते हैं। स्पिनोजा के शरीर और आत्मा दोनों में समानान्तरवाद (Parallelism) मानते है। ग्यूलिंक्स और मेलेब्रान्च देहात्मनिमित्तवाद (Occasionalism) को मानते है। लाइबनिट्ज के अनुसार शरीर और आत्मा में सम्बन्ध का कारण ईश्वर है। ईश्वर ने शरीर चिदणु और आत्मा चिदणु का निर्माण कर उनमें पहले से ही सम्बन्ध नियत कर दिया है। दोनों स्वतंत्र है, निरपेक्ष है परन्तु सहचारी है तथा एक दूसरे से सम्बद्ध है। दोनों एक ही विकास के दो स्तर है। लाइबनिट्ज ने घड़ी की गति में समानता के उदाहरण से शरीरात्म पर प्रकाश डाला है। दो घड़ियो की गति में समानता है। इस उदाहरण को सिद्ध करने के लिए लाइबनिट्ज ने तीन विचारों का प्रतिपादन किया है।

(क) दोनों घड़ियों के यंत्र बिलकुल समान हो तथा किसी माध्यमिक यंत्र से दोनों जुड़े हो। जिसके कारण एक ही क्रिया से दूसरे में प्रतिक्रिया उत्पन्न हो सके। देकार्त ने लाइबनिट्ज के पूर्व स्थापित सामंजस्य की आलोचना करते हुए कहा है कि पीनियल ग्लैंड नामक विशेष ग्रन्थि ही शरीर और आत्मा का मिलन-बिन्दु है। इसलिए अन्तःक्रिया रूप प्रकट होता है। लाइबनिट्ज का यह कहना बिलकुल सत्यता की ओर जाहिर होता है क्योंकि लाइबनिट्ज ने शरीर-चिदणु आत्मा-चिदणु से भिन्न है तथा दोनों चिदणु गवाक्षहीन होते है। इनका यह विचार अन्य दार्शनिकों से भिन्न है।

(ख) दो घड़ियो की गति में समानता हो सकती है। यदि उन्हें कोई कुशल

मशीन बनाकर ठीक करता रहे। शरीरात्मानिमित्तवादियों (Occasionalists) ने बतलाया है कि ईश्वर ही शरीर तथा आत्मा में सहचार का कारण है। लाइबनिट्ज ने इसे भी नहीं माने, क्योंकि उन्हें ईश्वर का सतत हस्तक्षेप मान्य नहीं तथा यह हस्तक्षेप ईश्वर के लिए उपयुक्त भी नहीं है।

(ग) दो घड़ियों की गति में समानता हो सकती है यदि उनका निर्माण ही इस कौशल से किया जाय कि दोनों सहचारी हैं। लाइबनिट्ज ने यह माना है कि कुछ कुशल कारीगर के रूप में ईश्वर को मानते हैं। ईश्वर का सतत हस्तक्षेप नहीं स्वीकार करते।

Date (313)

उपर्युक्त घड़ी का उदाहरण देकर लाइबनिट्ज जड़ और चेतन की समस्या का समाधान करते हैं। जड़ और चेतन नितान्त भिन्न नहीं जैसा देकार्ट [illegible] का कहना है। कि तथा दोनों समानान्तर भी नहीं है। स्पिनोजा का कहना है कि जड़ और चेतन दोनों में सम्बन्ध दोनों का सम्बन्ध ईश्वर के द्वारा नियत कर दिया गया है। लाइबनिट्ज पूर्णत: अचेतन अर्थ में जड़ की सत्ता नहीं मानते। देकार्ट जड़ और चेतन को नितान्त भिन्न मानते हैं। इसलिए इसे द्वैत के नाम से जाना जाता है। लाइबनिट्ज दार्शनिक का विचार अन्य दर्शनों से भिन्न है। उनका कहना है कि जड़ का अर्थ न्यून चेतन है, अचेतन नहीं जिसमें जितनी जड़ता है उतनी ही निष्क्रिय है। अतः जड़ता निष्क्रियता का द्योतक है केवल ईश्वर ही प्रोविडेन्स पूर्णत: चेतन है।

शरीर और आत्मा का पारस्परिक सम्बन्ध बुद्धिवादी दार्शनिकों के लिए बहुत बड़ी समस्या उत्पन्न हो जाती है। उसी प्रकार देकार्ट, स्पिनोजा, लाइबनिट्ज तीनों ने इस समस्या पर भिन्न-भिन्न विचार दिये हैं —

पूर्व स्थापित सामंजस्य का नियम न केवल शरीर एवं मन के सम्बन्ध की व्याख्या करता है बल्कि दो या दो से अधिक वस्तुओं के बीच किसी प्रकार के सम्बन्ध की यह व्याख्या करता है। इस नियम के आधार पर ही उन्होंने शरीर और मन, यंत्रवाद और सोद्देश्यवाद, स्वतंत्रता और अनिवार्यता के बीच समन्वय स्थापित करने का प्रयास किया है।

मन और शरीर का सम्बन्ध शासक और शासन का सम्बन्ध है। मन शासक है और देह शासित है। मन जो अधिक चेतन है, इस उद्देश्य की स्पष्ट व्याख्या करता है। देह इस उद्देश्य को स्पष्ट नहीं जानता है। उसे इसका मन्द ज्ञान या अज्ञान है। पूर्वस्थापित सामंजस्य के रूप में बेयले दार्शनिक ने इसे भिन्न बताया है लेकिन लाइबनीज ने सभी चेतनाणुओं में पूर्वस्थापित या पूर्वनिहित एकता के कारण अनुरूपता है। हमारे प्रत्यक्ष से पूर्वस्थापित एकता सिद्ध होती है। इससे सिद्ध होता है कि चेतनाणुओं हमारे प्रत्यक्षों में एकता है, आकांक्षाओं, भावनाओं और वासनाओं में भी वैसे ही एकरूपता दीख पड़ती है, जैसे ~~हमारे~~ हमारे प्रत्यक्षों में।

दोष या आलोचना :→ पूर्वस्थापित सामंजस्य की आलोचना करते हुए बेयले दार्शनिक का कहना है कि वास्तव में ईश्वरनिमित्तवाद ईश्वर के चमत्कारी हस्तक्षेप का सहारा नहीं लेता, क्योंकि इस मत में यह ईश्वर का सतत या नित्य व्यापार है और वह सृष्टि में सर्वत्र व्यापक है। चूँकि ईश्वर सर्वव्यापी है इसलिए वह सर्वत्र नित्य हस्तक्षेप करता है। उसका यह हस्तक्षेप आकस्मिक या चमत्कारपूर्ण नहीं है, किन्तु प्रकृति के नियम के अनुसार है। इसके विपरीत लाइबनीज का मत ईश्वर को स्रष्ट चेतनाणुओं से पृथक करता है और फिर उन पर ईश्वर का हस्तक्षेप दिखाता है। इसलिए पूर्वस्थापित एकता का ~~सिद्धान्त~~ चेतनाणुओं के लिए एक बाह्य हस्तक्षेप और चमत्कार है।

पूर्वस्थापित सामंजस्य नियम के बारे में अन्य दार्शनिकों का कहना है कि विश्व की व्याख्या का व्याख्या करने वाला अपरीक्षणीय सिद्धान्त है। ~~दूसरे के~~

दूसरे दार्शनिकों का कहना है कि यह सामंजस्य का नियम चिद्‌बिन्दुओं के भीतरी स्वरूप से उत्पन्न नहीं है। यह एक बाहरी सिद्धान्त है जो व्यवस्था की व्याख्या की व्याख्या के लिए ऊपर से लाद दिया जाता गया है। अन्य दार्शनिक इससे सहमत नहीं होते हुए उनका कहना है कि

(05)

चिद्‌बिन्दु नित्य है।, चिद्‌बिन्दु ईश्वर के द्वारा रचित है, दोनों बाते विरोधी है क्योंकि चिद्‌बिन्दु को नित्य मानने से ईश्वर की आवश्यकता नहीं होती क्योंकि बिना ईश्वर के पूर्व स्थापित सामंजस्य का नियम अधूरा रह जाता है, क्योंकि लाइबनीज का यह कहना विश्व की एकता के लिए बाधक हो जाता है कि चिद्‌णु गवाक्षहीन है। ~~सबका उद्देश्य~~ छिद्र रहित है फिर भी सबके कार्य मे समता है। सबका उद्देश्य एक है, यह उद्देश्य ईश्वर द्वारा निश्चित कर दिया गया है। यह विचार सही नहीं जान पड़ता।

लाइबनीज ने चिद्‌णु का तारतम्यक विकास (Hierarchical order) के रूप में स्वीकार किया है जो क्रमबद्धता नियम (law of continuity) के आधार पर आधारित है।

इस प्रकार लाइबनीज के पूर्वस्थापित सामंजस्य की आलोचना जिन दार्शनिकों ने की है फिर भी लाइबनीज का पूर्व स्थापित सामंजस्य अपने आप में महत्त्वपूर्ण रहता है क्योंकि विश्व मे सामंजस्य है साथ ही साथ चिद्‌बिन्दुओं को पूर्व सामंजस्य करने की शक्ति भी निहित है।

The End